शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# भिलाला लोक साहित्य में ग्रामीण जीवन

सुरसिंह जामोद (शोधार्थी)
हिन्दी साहित्य
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

## शोध संक्षेप

*लोक साहित्य शब्द दो शब्द से मिलकर बना है, जिसमें 'लोक' और 'साहित्य' शब्द समाहित हैं। 'लोक साहित्य' शब्द अंग्रेजी के folk lore शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। folk शब्द 'लोक' को तथा lore शब्द 'साहित्य' को बताता है जिसका अर्थ 'लोक का साहित्य' है।1 लोक साहित्य की विषय वस्तु किसी समाज विशेष या धर्म विशेष से संबंधित नहीं होती है। यह तो उस वृक्ष के समान है जिसने अपने अहाते में आने वाले प्रत्येक प्राणी को समान छाया प्रदान की है। इसकी परिधि में आकर धर्म, जाति, ऊँच, नीच, अमीर-गरीब सारे बंधन स्वयं ही बेजान से हो जाते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में भिलाला लोक साहित्य में ग्रामीण जीवन के विविध रूपों की चर्चा की गयी है*

## प्रस्तावना

लोक से जुड़ा सारा भाव सौन्दर्य लोक साहित्य में समाहित है। इस रत्ननिधि के समान साहित्य में जिसमें अदना-सा मोती भी चमक देता है। सारा मानव चाहे वह रास्ते में गुनगुनाता बंजारा हो या किसी खेत की मेड़ पर बैठा गाता किसान या फिर किसी मंच से सभी को अचंभित कर देने वाला कलाकार सभी इसे अपना समझकर इसकी प्रमाणिकता को स्वीकार करते हैं। इस प्रकार लोक साहित्य वह युग-युगीन साहित्य है जो परम्परा में प्राप्त होता है जिसके रचयिता का पता नहीं होता और जिसे समस्त लोक अपनी कृति मानता है।

डॉ.वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है , उसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है, लोक राष्ट्र का अमरस्वरूप है" लोक जीवन की अभिव्यक्ति है। वर्तमान में इनका साहित्य इनका अपना क्षेत्र है। उसकी पाठशाला, खेत-खलिहान, ढोर, जंगल, नदी, पहाड़ आदि तो हैं , वहीं पर साथ ही घुटनों तक कीचड़ में फंसे हुए उसके पाँव , गर्मी में झुलसते हुए चेहरे , ठंड में ठिठुरते हुए उसके हाथ-पाँव अर्थात् सब प्रकार की ऋतुओं की ओर उनकी भीषणताओं को अपने कलेजे पर झेलता हुआ वह इंसान है, जो धरती को सोना बनाता है, पर उसका पेट नहीं भरता।2 लोक साहित्य लोक जीवन की वाङ्मय अभिव्यक्ति है। लोकगीत , लोककथा, लोकनाट्य, लोकोक्ति, पहेली, लोकमंत्र, चुटकुले, लोकअनुश्रुति आदि शब्दार्थ में रचित अभिव्यक्ति लोक-साहित्य है। लोकवार्ता के अन्तर्गत लोक-साहित्य के अलावा प्रथा, परम्परा, षकुन-अपशकुन, रीति-रिवाज, त्यौहार, पूजा, अनुष्ठान, व्रत, टोना-टोटका, धारणाएँ, लोकचित्र, लोकशिल्प एवं लोकज्ञान का भी समावेश होता है। करवाचौथ की कहानी लोक साहित्य है।3

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

## लोक साहित्य की परम्परा

लोक साहित्य की परम्परा लोकजन को सदैव विमुग्ध करने के साथ ही साथ साहित्य की विपुल राशि को अगली पीढ़ी तक सुगमतापूर्वक पहुँचाती रही है। यह परम्परा आद्यन्त एक कण्ठ से दूसरे कण्ठ वैसे ही चली आई , जैसे जलराशि जड़ से पत्तियों तक। लोक साहित्य परम्परा को दो भागों में विभक्त किया जाता है 1. वाचिक परम्परा , 2. लिखित परम्परा ग्रामीण जीवन में वाचिक परम्परा को टटोला नहीं जाता, वह तो उत्फुल्ल और दारूण अवसरों पर उभरकर सामने आती है। उसे न दबाया या न छुपाया जा सकता है , वह तो बिना झेंप व बगैर झिझक के विभिन्न अवसरों पर मुखरित हो उठती है। ग्रामीण जीवन की प्रकृति , पर्वों, पूजा मान्यताओं की परिचायक वाचिक परम्परा निरन्तर आगे बढ़ती है तथा वहाँ के अन्तर्निहित तत्वों को उद्भाषित करती रहती है। मौखिक परम्परा में लोककथा , लोकगाथा, मिथकथा, लोकगीत, लोकमंत्र, पहेली, कहावत तथा मुहावरों का युक्तियुक्त निरुपण होता आया है।

भिलाली बोली अत्यन्त मृदु होती है। डॉ.शिवतोश दास लिखते हैं कि "मनुष्य के भोजन , वस्त्र, व्यवसाय, जीवन-निर्वाह के अन्य उपाय , यातायात के साधन , आचार-विचार तथा व्यवहार इत्यादि सब कुछ उसकी भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है, जिनमें वह रहता है।"4

भिलाली बोलियों ने अपने आसपास की बोलियों को प्रभावित किया है। निमाड़ी लोकगीतों पर भिलाली बोली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है । गणगौर पर्व के 'झालरियों' नाम से प्रसिद्ध गीत प्रचलित है देवी आज म्हारा आंगणा म छड़ो देवासे
देवी आज म्हारा आंगणा म रनुबाई आवसे
देवी आज म्हारा आंगणा म गौरबाई आवसे।5

गाँवों में घट्टी में मक्का पीसते समय का निम्न लोकगीत प्रचलित है -

"थोन थोन ओ मोक्कड माता। / धोन धोन म्हारा भाग।/ धोन धोन ओ । वारु म्हारी घोट्टी रोणी धोन-धोन धारा भाग।'6

भिलाली साहित्य ग्रामीण जीवन में अपनी आभा बिखेर रहा है। ढोल मांदल की हुकमती ध्वनि , बंसी की मचलती धुनों के साथ मधुर लोकगीतों और सौम्य मुद्राओं में थिरकते लोग बरबस ही अपनी तरो-ताजगी से झुरमुटों की ओर खींचते हैं। भीलाली लोकगीतों का अनुनाद कर्ण-कुहरों में पड़ते ही व्यक्ति पूरा गीत सुनने को बाध्य हो जाता है। थकान समाप्त हो जाती है और ऊर्जा की अनुभूति होती है।

गाँवों में रात के समय समूहों में बैठकर वार्तायें कही जाती हैं , जिन्हें तन्मय होकर समुत्सुक सुनते भी हैं। वार्ताओं से अविलंब दृश्य बनते जो हृदय पर सात्विक प्रभाव डालते हैं। करुणा भरे प्रसंग संवेदनाशून्य प्रवृत्तियों में भी भाव भर देते हैं। कहने वालों में जितनी उत्कंठा देखी जाती है उससे अधिक सुनने वालों में कुतूहल रहती है। कभी अलाव के आसपास बैठकर, कभी खुले गगन तले सौम्य बयारों में सुनते। वार्ताएँ सामान्यतः रात में ही कहीं जाती हैं तथा सुनते समय हुंकारा देने वाला निश्चित कर लिया जाता है , जिससे कहने वाले को समर्थन मिलता रहे। ताड़ी के समय कहने वाले के गले से जितने घूंट नीचे उतरते, वह उतनी ही रोचकता से प्रस्तुत करता है।

## भिलाली लोक साहित्य

भिलाली लोक साहित्य में चार प्रकार की लोककथाएँ पाई जाती हैं - बाल विकास कथाएँ , धार्मिक कथाएँ , नीति की कथाएँ एवं अद्भुत

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कथाएँ। इस प्रकार की कथाएँ सामान्यतः सभी आयु वर्ग के सदस्यों के लिए होती है। भीलाला ग्रामीण परिवेश में इनका अत्यधिक महत्व है। इसके अतिरिक्त देवताओं से संबंधित मिथ कथाएँ प्रचलित हैं।

भिलाला ग्रामीण जीवन में नाटकों का भी महत्व है। इनके लोकनाटकों में मनोरंजन के साथ शिक्षा भी होती है। सामान्यतः धार्मिक लोकनाटक , कुटगोरी लोकनाटक एवं बड़वा रोमणों लोकनाटक प्रचलित हैं। इन नाटकों में गायन , वादन, नृत्य और अभिनय का लालित्य रहता है, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। दिवासा से दीपावली तक की अवधि इसके मंचन के लिए निर्धारित है , इसके बाद इसके मंचन को निषेध माना जाता है। भिलालों की लोकगाथा गायन की परम्परा वर्तमान में भी विद्यमान है। ये लोग लोकगाथा शब्द से परिचित नहीं हैं, किन्तु गायन को अच्छी तरह से जानते हैं। रोगी को ठीक करने में , गाता स्थापित करने में और चूल के समय गायन किया जाता है। भीलाली ग्रामीण जीवन में वीर लोकगाथाएँ, प्रेम लोकगाथाएँ , सृष्टि लोकगाथाएँ एवं दैविक लोकगाथाएँ प्रचलित हैं।

भिलाला लोक साहित्य में पहेलियों का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। पहेलियों में भाव-विचार एवं अंग संबंधी पहेलियाँ, खाने-पीने एवं साधन संबंधी पहेलियाँ, पशु-पक्षी एवं जन्तु संबंधी पहेलियाँ, पेड़-पौधे एवं फसल संबंधी पहेलियाँ तथा खगोल-भूगोल एवं गणित संबंधी पहेलियाँ प्रचलित हैं -

“एक पगड़ी दुई भाई बांधे।”

अर्थात् एक पगड़ी को दोनों भाई बांधते हैं।

उत्तर - बैलों की रास।

“सूखले लकड़े हुली टचका फोड़े।”

अर्थात् सूखी लकड़ी पर पक्षी चोंच मारे।

उत्तर - कुल्हाड़ी।

इसी प्रकार भिलाला लोक साहित्य के अन्तर्गत ग्रामीण जीवन में कहावतें भी प्रचलित हैं। सामान्यतः प्रतीकात्मक कहावतें , व्यंग्यात्मक कहावतें, नीतियुक्त कहावतें , शोषकों के प्रति विद्रोहात्मक कहावतें , विनोदात्मक कहावतें एवं उपदेशात्मक कथाएँ प्रचलित हैं -

“आवणो होय ते घर, ताणो होय ते वाट।”

अर्थात् आना हो तो घर, जाना होय तो मार्ग।

“मांजरिन कोहले सिको नी टूटे। अर्थात् बिल्ली के कहने से छींका नहीं टूटता है।

“गाड़ी उथली जाय ने गणित सवारे ते काई काम दे।” अर्थात् गाड़ी पलटने के बाद चिन्तन व्यर्थ है।

## निष्कर्ष

इस प्रकार भिलाला लोकसाहित्य के विविध आयाम हमें ग्रामीण जीवन में देखने को मिलते हैं। सुदूर ग्रामीण अंचलों में अभावों में अपना जीवन व्यतीत करते हुए वे अपने लोकसाहित्य की सशक्त परम्परा का निर्वाह करते हुए सभी परिस्थितियों में प्रसन्न रहते हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ

*1 पारिभाषिक शब्द को श, ज्ञान मण्डल प्रका शन, सितम्बर, 1992, पृष्ठ 753*

*2. लोक साहित्य की भूमिका , डॉ. सी.पी.शुक्ल, पृष्ठ. 40*

*3. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ. राजेन्द्ररंजन चतुर्वेदी, पृष्ठ 40*

*4. डॉ..शिवतोश दास, भारत की जनजातियाँ, पृष्ठ 64*

*5. श्री रामनारायण उपाध्याय , निमाड़ का सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 306*

*6. श्रीमती इंदु मुराब , भिलाला जनजाति का संक्षिप्त मानवशास्त्रीय अध्ययन, पृष्ठ.15*